RANIGANJ GIRLS' COLLEGE

HINDI DEPARTMENT

DIGITAL WALL MAGAZINE

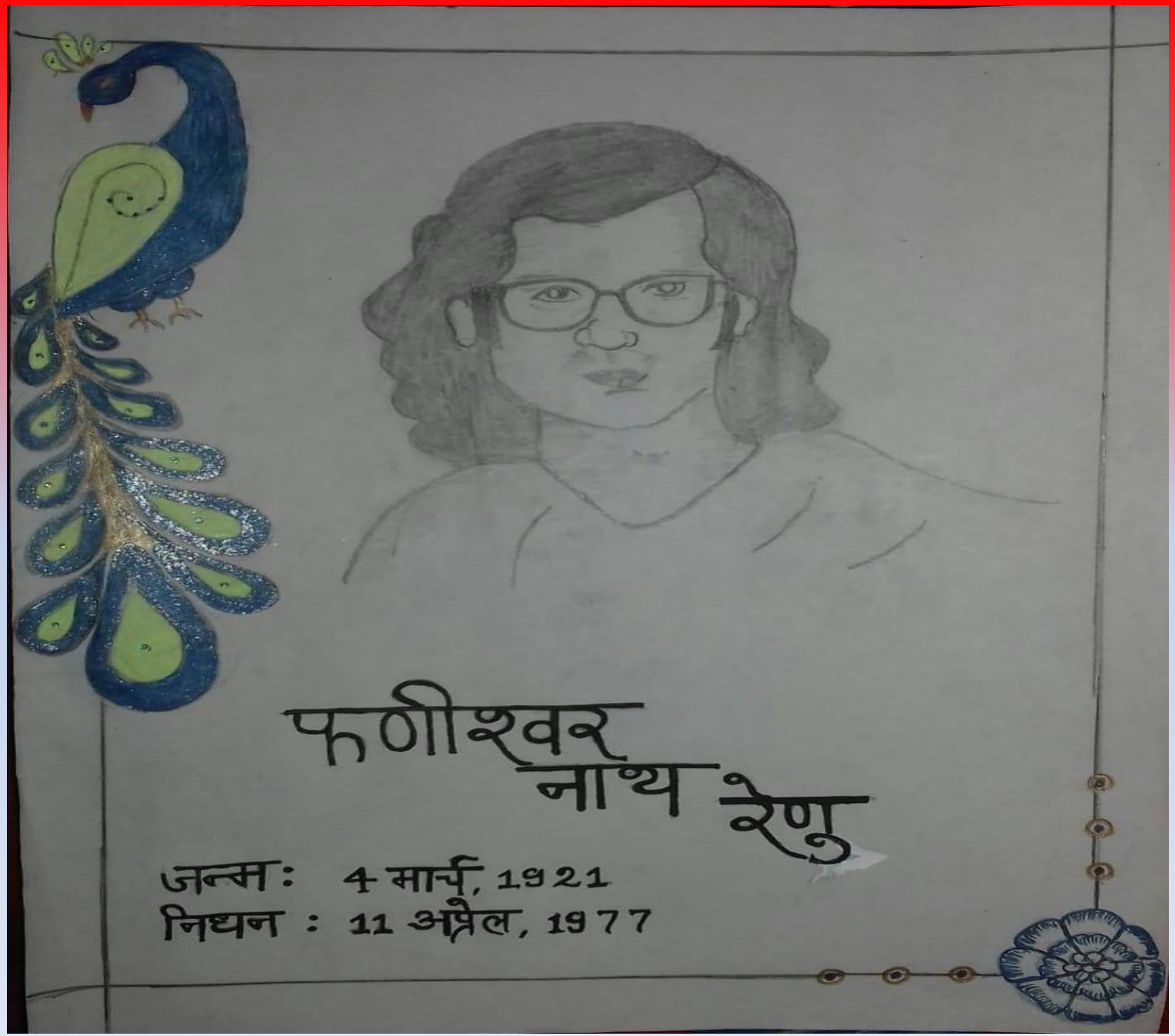
फणीश्वर नाथ रेणु
जन्म: 4 मार्च, 1921
निधन : 11 अप्रैल, 1977

विषयानुक्रमणिका

Section	Slide number
• फणीश्वर नाथ 'रेणु' की जीवनी और कृतित्व	4-5
• फणीश्वर नाथ 'रेणु' की कहानियाँ और उनका उद्देश्य	6-9
• फणीश्वर नाथ 'रेणु' के उपन्यास और उनका उद्देश्य	10-14
• फणीश्वर नाथ 'रेणु' के रिपोर्ताज और उनका उद्देश्य	15-17
• फणीश्वर नाथ 'रेणु' की कविताएं और उनका उद्देश्य	18-19

फणीश्वर नाथ "रेणु" की जीवनी और कृतित्व

जन्म :— फणीश्वर नाथ "रेणु" का जन्म 4 मार्च 1921 को बिहार के अररिया जिले में फॉरबिसगंज के पास औराही हिंगना गाँव में हुआ था।

शिक्षा :— रेणु की शिक्षा भारत और नेपाल में हुई। प्रारंभिक शिक्षा फारबिसगंज तथा अररिया में पूरी करने के बाद रेणु ने मैट्रिक नेपाल के विराटनगर आदर्श विद्यालय से कोईराला परिवार में रहकर की। इन्होंने इन्टरमीडिएट काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से 1942 में की।

योगदान :— रेणु का जीवन उतार - चढाव व संघर्षों से भरा हुआ था। उन्होंने अनेक राजनीतिक व सामाजिक आंदोलनों में बढ़ - चढ़कर भाग लिया। सन् 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय भागीदारी निभाई तथा 1950 में नेपाल के राणाशाही विरोधी आंदोलन में नेपाली जनता को दमन से मुक्ति दिलाने के लिए भी अपना योगदान दिया। वे राजनीति में प्रगतिशील विचारधारा के समर्थक थे।

REDMI NOTE 9 PRO

साहित्यिक कृतियाँ

उपन्यास :— मैला आंचल - (1954) ई०, परती परिकथा - (1957) ई०, जुलूस - (1966) ई०, दीर्घतपा - (1963) ई०, कितने चौराहे - (1966) ई०, पलटू बाबू रोड - (1976) ई०।

कहानी संग्रह :— एक आदिम रात्रि की महक, ठुमरी, अग्निखोर, अच्छे आदमी।

प्रसिद्ध कहानियाँ :— तीसरी कसम उर्फ मारे गए गुलफाम, एक आदिम रात्रि की महक, लाल पान की बेगम, पंचलाइट, तबे एकला चलो रे, संवदिया, ठेस, भित्ति चित्र की मयूरी।

रिपोर्ताज :— ऋणजल - धनजल, नेपाली क्रांतिकथा, वनतुलसी की गंध, श्रुत - अश्रुत पूर्वे।

सम्मान :— भारत सरकार ने 1970 ई० में 'रेणु' को पद्मश्री सम्मान से सम्मानित किया।

मृत्यु :— 11 अप्रैल 1977 ई० को पटना में 'फणीश्वर नाथ 'रेणु' का देहावसान हो गया।

फणीश्वर नाथ रेणु की कहानियां और उनका उद्देश्य

फणीश्वर नाथ 'रेणु' हिंदी जगत के सुप्रसिद्ध आंचलिक कथाकार हैं, ग्रामीण अंचलों से उनका निकट परिचय है। उनकी कहानियों में अंचल विशेष की खुशबू आती है। उनके द्वारा रचित प्रमुख कहानियां हैं- पंचलाइट, लाल पान की बेगम, ठेस, संवदिया और तीसरी कसम उर्फ मारे गये गुलफाम इत्यादि। इन्हें निम्नलिखित रूप में देखा जा सकता है —

पंचलाइट :— यह रेणु की प्रसिद्ध आंचलिक कहानी है। इसमें भारतीय गाँव का वास्तविक चित्र अंकित किया गया है। पंचलाइट जलाने की समस्या और उसके समाधान के माध्यम से ग्रामीण मनोविज्ञान को दिखाया गया है। गाँव जाति के आधार पर अनेक टोले में बंटे होते हैं। इनमें अज्ञानता, अंधविश्वास तथा परस्पर ईर्ष्या-द्वेष की भावना अधिक होती है। प्रेम संबंध बुरा माना जाता है। गाँव की लड़की से प्रेम करने के कारण पंचायत गोधन पर प्रतिबन्ध लगाती है, लेकिन पंचायत द्वारा खरीदे गये पंचलाइट को जब गाँव वाले नहीं जला पाते तो गोधन ही उसे जलाता है, फलतः पंचायत उसे माफ कर देती है। रेणु ने इस कहानी के माध्यम से दिखलाया है कि आधुनिक युग में भी भारतीय गाँव इन भौतिक सुख-सुविधाओं से वंचित है।

लाल पान की बेगम :— इस कहानी में रेणु ने ग्रामीण भारतीय नारी के स्वाभिमानी रूप का चित्रण किया है। नारी पति और परिवार की शक्ति होती है। इस कहानी की नायिका बिरजू की माँ के प्रोत्साहन से उनका सीधा-साधा पति पाँच बीघा जमीन खरीद पाता है। वह बैल गाड़ी से नाच देखने जाने की इच्छा पति के सामने रखती है, लेकिन देर होने पर वह रूठ जाती है। गाँव की औरतें उसके रंग-रूप को देख ईर्ष्या-वश उस पर व्यंग्य करती हैं, लेकिन बैल गाड़ी की व्यवस्था होते ही लोगों की कटुक्तियों की परवाह न कर वह गाँव की बहु-बेटियों को अपने साथ नाच दिखाने ले जाने के लिए तत्पर होती है। रेणु ने इस कहानी के माध्यम से ग्रामीण जीवन की सरलता, ईर्ष्या-द्वेष तथा आत्मीयता को दिखाया है।

ठेस :— इस कहानी में ग्रामीण क्षेत्र के एक कलाकार की कथा है जो अतिस्वाभिमानी है। उस कलाकार को जब आदर और सम्मान के बदले समाज में अनादर और अपमान मिलता है तो उसके हृदय को ठेस पहुँचती है इसी कारण वह विवश हो कर भविष्य में काम न करने का कठोर निर्णय लेता है, लेकिन मानू की सहृदयता के कारण वह शीतल पाटी चिक तथा आसनी बना कर उसे भेंट करता है। रेणु ने इस कहानी में एक कलाकार के स्वाभिमान, भावुकता, अपनी कला के प्रति समर्पण का भाव तथा धन की अपेक्षा मानवीय संवेदना और प्रेम की भूख को दर्शाया है।

संवदिया :— संचार माध्यमों का जब विकास नहीं हुआ था तब व्यक्तिविशेष (संवदिया) ही एक गाँव से दूसरे गाँव में जाकर समाचार पहुँचाते थे। इनका काम अत्यन्त कठिन था। रेणु की संवदिया कहानी में नाम के लिए हवेली की बड़ी बहु, जो वैधव्य के भार तले आर्थिक विपन्नता के कारण साग खा कर अकेले गुजारा कर रही है। असह्य दुख के कारण वह हवेली छोड़कर मायके जाकर अपने घर वालो के जूठे बर्तन धो कर गुजारा करने को भी तैयार है। यही संवाद वह संवदिया से अपने मायके भेजना चाहती है। उसकी पीड़ा से आहत हो कर भी, लेकिन गाँव की इज्जत बचाने के लिए संवदिया यह संवाद उसके घर पहुँचकर भी नहीं दे पाता है और वापस लौटकर वह उस बहमी को अपनी माँ बना लेता है। रेणु ने इस कहानी में हवेली में रहने वाली स्त्रियो के अकेलेपन, दुखः तथा पीड़ा का यथार्थ चित्रण किया है।

तीसरी कसम उर्फ मारे गए गुलफाम :— इस कहानी में आम आदमी के जीवन-संघर्ष को जीवन्त रूप में प्रस्तुत किया गया है। कहानी का नायक हिरामन सीधा-साधा बैल गाड़ी चालक है। जीवन के कटु अनुभव के कारण चोरी का माल तथा बाँस की लदनी अपनी गाड़ी पर ना लादने की कसम खाता है। मानवीय प्रेम की संवेदना को हिरामन और हीराबाई के माध्यम से यथार्थ रूप में

प्रकट किया गया है। हीराबई नौटंकी कम्पनी की नर्तकी है। उसके सौन्दर्य, गंध तथा मधुर वाणी से प्रभावित हो हिरामन आकर्षण बद्ध होता है। उसे खरीद फरोख्त की वस्तु बना दिया जाता है। एक नौटंकी से दूसरे नौटंकी में बेच दिया जाता है। हिरामन और हीराबाई का सांकेतिक प्रेम बीच में ही दम तोड़ देता है। फलतः हिरामन नौटंकी कम्पनी को लदनी न लादने की कसम खाता है। रेणु ने इस कहानी के माध्यम से यह संकेत किया है कि मनुष्य अपने जीवन तथा कला का व्यवसायीकरण करने के लिए अपनी कोमल भावनाओं को कुचल देता है।

फणीश्वर नाथ रेणु के उपन्यास और उनका उद्देश्य

फणीश्वर नाथ रेणु को उपन्यास लेखन में अविस्मरणीय योगदान है। उनको उपन्यास हिंदी साहित्य में मिलका पत्थर है। उन्होंने आंचलिक उपन्यास की नींव डाली हालांकि कुछ विद्वान इस पर भी प्रश्न चिन्ह लगाते हैं।

उनके प्रमुख उपन्यास है:- मैला आंचल, परती परिकथा, पलटू बाबू रोड, दीर्घतपा, कितने चौराहे, जुलूस आदि

मैला आँचल

मैला आंचल, फणीश्वर 'रेणु' का श्रेष्ठ आंचलिक उपन्यास है। रेणु हिन्दी के सुप्रसिद्ध आंचलिक कथाकार है। यह रेणु का प्रथम उपन्यास है। इस उपन्यास के लिए रेनु को पद्म श्री पुरस्कार मिला था।

इस उपन्यास में रेणु ने पुरें भारत के ग्रामीण जीवन का चित्रण करने की कोशिश की है। 'मैला आँचल' उपन्यास बिहार राज्य के पुर्णिया जिले के मेरीगंज के ग्रामीण जीवन से संबद्ध है। रेणु के अनुसार "इसमें फूल भी है, शूल भी है, धूल भी है, गुलाब भी है और कीचड़ भी है"। "मैंने किसी से हामम बचाकर निकल नहीं पाया"। इसमें गरीबी, रोग, भुखमरी, जहालत, धर्म की आड़ में हो रहे व्याभिचार, शोषण, अंधविश्वासों, बाह्याडंबरों आदि का चित्रण है।

- रेणु ने मैला आँचल में आँचलिक शब्दों का सुंदर प्रयोग किया है, जिसमें एक नयी भाषिक संरचना का बोध होता है। भाषा अनुकूल एवं सहज प्रभावित है। मंशीगंज क्षेत्र के विभिन्न कथाओं को एक धागे में बहुत खुबसूरती के साथ पिरोया गया है। निश्चय ही मैला आँचल लोक संस्कृति एवं भाषा प्रयोग की दृष्टि से हिन्दी साहित्य की अनमोल धरोहर है।

परती परिकथा

मैला आँचल के बाद यह रेणु का दूसरा आँचलिक उपन्यास है।

इसमें परनपुर गाँव कथा के केन्द्र में है। गाँव में जातियों और उपजातियों की स्थिति वैसी ही है। विभिन्न सरकारी योजनाओं ग्राम समाज सुधार और विकास योजनाएँ, जमींदारी उन्मूलन, लैंड सर्वे ऑपरेशन, कैसी योजना आदि के प्रति लोगों में अपार उत्साह है। उपन्यासकार ने जमींदारी व्यवस्था को केन्द्र में रखकर देश के सामंतो और पूंजीपतियों का चेहरा साफ किया है। यही कारण है कि उपन्यासकार फलक बड़ा हो गया है। जमींदारी व्यवस्था को लेकर रेणु की दृष्टि बहुत ही पैनी है।

कलीश्वर नाथ रेणु ने "परती परिकथा" में यह दिखाने का प्रयास किया है कि जमींदारी या पूंजीपति वर्ग के लोग, आमजनों का सादियों से शोषण करते हुए

आ रहे हैं। यह उपन्यास इसलिए भी प्रासंगिक है कि आजादी के पहले से आज तक यही स्थिति बनी हुई है। उपन्यास की सबसे बड़ी विशेषता इसमें सिर्फ समस्याओं का चित्रण-भर ही नहीं है, बल्कि उन समस्याओं का समाधान खोजने का विलक्षण प्रयास भी दिखता है।

रेणु ने अपने उपन्यास 'परती परिकथा' में जिन समस्याओं को उठाया है वे समस्याएँ आज भी हमारे समाज में जीवित हैं तो किसानों और मजदूरों की तरफ से भी संघर्ष जारी है।

पलटू बाबू रोड

'पलटू बाबू रोड' अमर कथाशिल्पी फणीश्वरनाथ रेणु का लघु उपन्यास है। यह पटना से प्रकाशित मासिक पत्रिका 'ज्योत्स्ना' के दिसम्बर, 1959 से दिसम्बर 1960 के अंकों में धारावाहिक रूप से छपा था। नई-नई कथा भूमियों की खोज करनेवाले रेणु 'पलटू बाबू रोड' में एक कस्बे को अपनी कथा का आधार बनाते हैं। वे कठोर, विकृत और हरासो समाज की तिरस्कीय प्रखरता के साथ परसते हैं। इस उपन्यास का लक्ष्य है, उच्च वर्ग के अंतर्विरोधों, उसकी गिरावट, राजनीतिक और आर्थिक संबंधों में व्यापार आदि का चित्रण।

दीर्घतपा

दीर्घतपा की कथावस्तु बिहार की राजधानी पटना के एक वर्किंग वीमेंस हॉस्टल के आस-पास बुनी गई है। गोपाल राय के अनुसार- "इस उपन्यास में इस छात्रावासों के अन्दर पनपने वाले भ्रष्टाचार, स्त्रियों के काम शोषण आदि का अंकन हुआ।"

दीर्घतपा फणीश्वरनाथ रेणु का एक मर्मस्पर्शी उपन्यास है। इस उपन्यास के माध्यम से लेखक ने जहाँ वीमेंस वेलफेयर की आड़ में महिलाओं के यौन उत्पीड़न को उजागर किया है, वहीं सरकारी वस्तुओं की लूट-खसोट पर से पर्दा हटाया है।

कितने चौराहे

फणीश्वर नाथ रेणु द्वारा रचित 'कितने चौराहे' पठनीय लघु उपन्यास है। इस उपन्यास के वृतान्त में लेखक ने निजी जीवन की कई घटनाओं को संयोजित किया है। 'कितने चौराहे' की रचना का उद्देश्य स्पष्ट है। यह उपन्यास आजादी के लिए संघर्ष करने और बलिदान देनेवाले युवकों को केन्द्र में रखकर लिखा गया है। साथ ही आज के किशोरों में देश प्रेम, सेवा, त्याग आदि आदर्शों के प्रति जागृत हो सके। यह उपन्यास व्यक्तिगत सुख: दुख:, स्वार्थ-मोह से ऊपर उठकर देश के लिए जीने-मरने वालों के मननीय, संवेदनशील रूप को उभारता है।

जुलूस

यह उपन्यास पूर्वी बंगाल की एक विस्थापित युवती पवित्रा को केन्द्र में रखकर चलता है। रेणु विभिन्न विशेषताओं एवं सामाजिक व्यवहार वाले मनुष्यों का एक चित्र सामाजिक जुलूस के रूप में रख देते हैं, लेकिन आंचलिकता के प्रति उनमें कोई उत्साह यहाँ दिखाई नहीं देता। इस उपन्यास को पढ़कर बिहार की ओर के माध्यम से समूचे देश की विकृतियों का कुछ पूर्वाभास अवश्य पाया जा सकता है।

फणीश्वरनाथ रेणु के रिपोर्ताज और उनका उद्देश

हिन्दी कथा साहित्य में जहां एक ओर फणीश्वरनाथ रेणु कथाकार के रूप में स्थापित हैं, वहीं उनके द्वारा लिखे गए रिपोर्ताज का भी महत्वपूर्ण स्थान है।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद साहित्य में एक नई विधा का प्रारंभ हुआ रिपोर्ताज। रेणु रिपोर्ताज में उन लेखकों में से हैं जिन्होंने इस विधा को हिंदी साहित्य में प्रतिष्ठित किया।

फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा रचित कुछ प्रमुख रिपोर्ताज हैं — ऋणजल - धनजल, नेपाली क्रांतिकथा, वनतुलसी की गंध, श्रुत अश्रुत पूर्वे, सरहद के उस पार, नए सवेरे की आशा, हड्डियों का पुल, एकलव्य के नोट्स, जीत का स्वाद, पुरानी कहानी : नया पाठ, युद्ध की डायरी, भूमिदर्शन की भूमिका, पटना जल प्रलय।

रेणु के द्वारा लिखे गए रिपोर्ताज उस समय की महत्वपूर्ण पत्रिका में प्रकाशित हुई थी, जैसे - विश्वामित्र, जनता, धर्मयुग, उर्वशी, संकेत आदि।

<u>नेपाली क्रांति कथा</u> :- इस रिपोर्ताज में रेणु कहते हैं, "दिन-प्रतिदिन नेपाली प्रजा की जिंदगी बदतर होती जा रही है. इस पर तुर्रा यह कि अभी और भी कितने शिकार अपने-अपने दाँतों को तेज कर रहे हैं। नेपाली लोगों का जीवन कष्टों से भरते जा रहा है। 'प्रभो'। मुझे सिर्फ छुट्टी दिलाने वाली मिल ही सकेगी की आशा ही जाएगी"।

इस रिपोर्ताज का महत्व इसलिए भी है, क्योंकि इस रिपोर्ताज के प्रकाशन के बाद ही विराटनगर के मज-दूरों का आंदोलन शुरू हुआ। इस रिपोर्ताज में रेणु ने राणाशाही के अधीन नेपाल की स्थितियों का सजीव चित्रण किया है।

<u>भूमिदर्शन की भूमिका</u> :- यह रिपोर्ताज छह अंकों में दिन-मान (पत्रिका) के दिसंबर-जनवरी, 1966-67 के अंकों में प्रकाशित हुआ था। यह एक यात्रा-कथात्मक शैली में लिखा गया रिपोर्ताज है, जिसमें दक्षिण बिहार के सूखे अकाल का वर्णन है।

रेणु सूखे, भूखे दलित वर्ग के लोगों और भूख से तड़प-तड़प कर मरते हुए मनुष्यों का दर्शन करवाकर असली हिंदुस्तान का साक्षात्कार करवाती हैं. इस

अकाल परिस्थिति को देखकर रेणु का मनोबल टूट चुका था। हड्डियों का पुल रिपोर्ताज में रेणु का मनोबल जीवित था, लेकिन भूमिदर्शन की भूमिका वाला रेणु उम्मीद खो चुका रेणु है।

हड्डियों का पुल :- इस रिपोर्ताज में कोसी क्षेत्र में आए भुखमरी का वर्णन किया गया है। एक ऐसा अकाल जहाँ मानव के मानवीयता ने घुटने टेके थे। नेताओं के कुत्सित रूप सामने आए थे। इस अकाल में सत्य, अहिंसा, गांधी जी और राम राज्य की छाती कुचली गई। इस भीषण अकाल के समय जमींदारों के यहाँ खीर-पूड़ी, मिठाई, व मांस आदि व्यंजनों की वहीं उड़ायी जाती है, वहीं मजदूरों के यहाँ दाने-दाने के लाले पड़े हैं।

पटना जलप्रलय :- यह रिपोर्ताज 1975 में पटना में आए बाढ़ पर लिखा गया था। रेणु इस रिपोर्ताज में लोकगाथा का प्रयोग करके रोचकता ला देते हैं। इस रिपोर्ताज के लेखन आपातकाल के काले साए में जी रहे थे, अतः रेणु ने सरकार पर खुलकर प्रहार नहीं किया। शायद इसलिये यह रचना उतनी प्रभावित नहीं हो सकी है।

बाढ़ और अकाल पर लिए गए इनके रिपोर्ताज कई मायनों में प्रासंगिक हैं। जब-जब सत्ता और सरकारी तंत्र की जनविरोधी नीतियाँ सामने आएगी, तब-तब ये रिपोर्ताज एक मशाल की तरह इनके भ्रष्ट चेहरों को दिखाएगा।

फणीश्वर नाथ रेणु की कविताएँ और उनका उद्देश्य :-

फणीश्वर नाथ रेणु ने गद्य विधा के साथ-साथ कविताएँ भी लिखी हैं। उनकी कुछ प्रमुख कविताएँ हैं— इमेजेंसी, बहुरूपिया, सुंदरियों, जागो मन के सजग पथिक ओ, यह फागुनी हवा, मिनिस्टर मंगरू, साजन! होली आई है!, अपने जिले की मिट्टी से, मेरा मीत सनीचर!

फणीश्वर नाथ रेणु की एक प्रमुख कविता

साजन! होली आई है।

साजन! होली आई है।
सुख से हँसना
जी भर गाना
मस्ती से मन को बहलाना
पर्व हो गया आज
साजन! होली आई है।
हँसाने हमको आई है।
साजन! होली आई है।
इसी बहाने
क्षण भर गा लें
दुखमय जीवन को बहला लें
ले मस्ती की आज
साजन! होली आई है।
जलाने जग को आई है।

अर्थ : साजन! होली आई है! कविता मुख्य रूप से होली के ऊपर लिखी गई है। प्रस्तुत कविता में रेणु होली के माध्यम से भारतीय संस्कृति में त्योहार के महत्व को उजागर करते हैं। भारतीय संस्कृति में त्योहारों का अपना विशेष महत्व है। होली वसंत ऋतु में मनाया जाता है। यह त्योहार आपसी भाईचारे का प्रतीक भी है। होली में लोग अपने दुःख-दर्द को भूलकर आनंद के साथ एक दूसरे को गुलाल लगाते हैं। मिठाइयों का आदान-प्रदान होता है। समाज का प्रत्येक वर्ग होली के त्योहार को आनंद के साथ मनाता है।

फणीश्वर नाथ रेणु की कविताएँ एक अद्भुत किस्सागो की तरह लगती हैं। इन कविताओं को पढ़ते हुए लगता है जैसे कोई कहानी सुना रहा हो। ग्राम्य जीवन के लोकगीतों का रेणु ने अपने साहित्य में सर्जनात्मक प्रयोग किया है। इनका लेखन प्रेमचंद की सामाजिक यथार्थवादी परंपरा को आगे बढ़ाता है। इसी कारण इन्हें स्वतंत्रता के बाद का प्रेमचंद की संज्ञा भी दी जाती है। इनकी कविताओं में आंचलिक शब्दों की अद्भुत लड़ी देखने को मिलती है।

फणीश्वर नाथ रेणु की कविताएँ समाज के साथ जुड़कर राष्ट्र की बात कहती हैं। उनकी कविताओं में भारतीय संस्कृति, भारतीय परंपरा, आंचलिक शब्द स्पष्ट रूप से गुथे हुए दिख जाएँगे।

योगदानकर्ता और संपादकीय बोर्ड

- फणीश्वर नाथ 'रेणु' की जीवनी और कृतित्व : साक्षी अरोड़ा, श्वेता शर्मा, अंजली कुमारी (5th semester honours)
- फणीश्वर नाथ 'रेणु' की कहानियाँ और उनका उद्देश्य : साक्षी अरोड़ा, श्वेता शर्मा, अंजली कुमारी (5th semester honours)
- फणीश्वर नाथ 'रेणु' के उपन्यास और उनका उद्देश्य : ज्योति नोनिया, मुसकान रजक, सुष्मिता ठाकुर (5th semester honours)
- फणीश्वर नाथ 'रेणु' के रिपोर्ताज और उनका उद्देश्य : शालिनी कुमारी साह (5th semester honours)
- फणीश्वर नाथ 'रेणु' की कविताएं और उनका उद्देश्य : निशा खातून, प्रभा कुमारी (5th semester honours)

Teachers of Hindi Department

- डॉ. अनीता मिश्रा (Associate Professor)
- डॉ. जगमोहन सिंह . (Assistant Professor)
- नीलम मिश्रा (SACT)
- डॉ. कृष्णा सिंह (SACT)
- प्रियंका सिंह (SACT)
- राजेंद्र महतो (SACT)

धन्यवाद